मोकाम दिस

(मैथिली बीहनि कथा संग्रह)

मुन्ना जी

"बीहनि कथा " शब्द सृजनहार श्रीराज कें सादर समर्पित

12- दासीन

13- प्रतीक

14- सिनेहक धार

15- । ऐबकी बेरिया

16- पर्दा पर

17- पसार

18- आशीर्वाद

19- आंचर

20- उठल्लू

21- बाट-घाट

22- द्वन्द

23- परमेश्वर

24- जिया जरय सगर राति

25- साढ़े एकैसम सदी

26- भूख

27- टेट्टर

28- गणतंत्र

29- दायित्व

30- चांछ

31- लौल

32- बीहरौन

33- संकेत

34- लुतुक

35- तरघुसकी

36- पुश्तैनी

37- जुआनी

38- अर्थ

39- खरजितिया

40- एहि माटिक रंग

41- जब्बरि

42- हिक

43- अदौ सं

44- कन्टाह

45- झोल

46- पटकनिया

47- पछतावा

48- करोट

49- असरा

50- संगवे

51- निवहता

52- रक्षा

53- विचरण

54- चुनरी

55- मुक्ति

56- दरेग

57- रिपोर्ताज

58- परस्पर

59- टकटकी

60- सुतिहार

61- वैधव्यता

62- कोखिन

63- विधान

64- मए बनबाक हर्ष

65- भार उघैत

66- निमुधन नै छी

67- बेर पर

68- उपरौंज

69- विहान

बीहनि कथा-- मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष

""'''''""""""""""

मैथिली कथा साहित्य मूलत: संस्कृत भाषा साहित्य सं अनुदित भ'अपन पएर पसारने छल।एकर बीजारोपन चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक 'पुरूष परीक्षा' सं भेल छल।कालान्तर मे मैथिली कथाकार बाङला कथा माध्यमे पाश्चात्य कथासाहित्य सं परिचित भेला।तत्पश्चात मैथिली कथा लेखनक कथ्य,शिल्प आ विषय परिमार्जित भ' मैथिली कथा साहित्य के नव दृष्टि देलक आ ओ संस्कृतक शब्द ,कथा/गल्प नामे लिखाइत रहल।पछाति प्रो. रमानाथ झा सदृश्य

विद्वान/आलोचक ,अंग्रेजीक प्रभावे एकरा अंग्रेजी मे Short Story आ ओकर अनुवाद ' लघुकथा कहि संबोधित केलनि।तहिया सं इ कथा/ गल्प ,रचना त' ओही नामे होइत रहल मुदा विधागत ' लघुकथा ' (Short Story) विधाक अन्तर्गत मूल्यांकित होइत रहल।आ ताहि परिणामे मैथिलीक सब संग्रह पर अंग्रेजी मे Collection of Short Story अनिवार्य रूपें लिखल भेटत।

तकर पछाति मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि सेहो कथा/गल्प नामक रचना कें लघुकथा विधाक श्रेणी मे राखि व्याख्या . करैत रहलाह।" संप्रति गल्प वा लघुकथा,उपन्यास सं अधिक लोकप्रिय भेल जा रहल ऐछ।तकर प्रबल कारण पाठक वर्ग मे क्रय शक्तिक क्षीणता वा पलखतिक अभाव, से नै जानि।" --डॉ. जयकान्त मिश्र-मैथिली साहित्यक इतिहास(प्रकाशक- साहित्य अकादमी)ऐ फरिछओठक पछाति अंग्रेजी साहित्यक विधाक पृष्ठभूमि मे ओहि विधा परिवारक अंग भ' स्थापित भेल। आगू ओकरा आओर फरिछबैत दुर्गानाथ झा श्रीश लिखै छथि--" आइ मैथिली साहित्यक एक मात्र उपलब्धि थिक लघुकथा(Short Story) पूर्वक कथाकार लोकनि गल्प आ उपन्यासक बीच शिल्पगत अन्तर नै बुझैत छलाह।मुदा आब इ स्पष्ट ऐछ।जाहि सं लघुकथा(कथा/गल्प नामे) विधागत स्वतंत्र परिचिति बना पओलक ऐछ।"--मैथिली साहित्यक इतिहास-दुर्गानाथ झा श्रीश।"

हमरा मैथिली प्रतिष्ठा वर्गक छात्र रहने मैथिली साहित्यक इतिहासक अध्ययनक अनिवार्यता छल। एहि अध्ययनक क्रमे मैथिली कथा के विधागत ' लघुकथा(Short Story)बुझबाक अवगति भेल। हम आश्चर्य चकित रही अग्रज सबहक हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरणक रूपें अंधानुकरण पर, ई की ?पहिने सं जे विधा विद्यमान आ स्थापित ऐछ(कथा/गल्प नामे) ' लघुकथा(Short Story)।तहन ओइ विधाक दोहरीकरणक की खगता ?माने पिता आ पुत्रक एकहि नामे पुकार ! जहन की दुनूक चरित्र,प्रकृति आ क्रियाकलाप एक दोसराक विपरीत। फेर नकल वा मिझरक अज्ञानता किएक ? ओही अज्ञानता वा अंधानुकरण सं पार पएबाक आ विधाक शुन्यता के भरवाक लेल अवतरित भेल बीहनि कथा विधा (1995)।

सहयात्री मंच ,लोहना(मधुबनी)द्वारा भेल साहित्यिक बैसार मे सामूहिक रूपें सर्वसम्मति सं एहि विधाक अवतरण भेल छल। ऐ विधाक नाम की राखल जए ताहि पर बहसक पछाति श्री राज द्वारा ताकल नाम-" बीहनिकथा" पर सर्व सम्मति सं स्वीकृति द'आगू बढ़ाओल गेल।आ तहिया सं मैथिली कथा साहित्यक दू गोट विधा-पहिल,लघुकथा(Short Story)आ दोसर " बीहनि कथा(Seed Story)चलन सारि मे रहि गेल।

25 बरख सं कछुआ चालि सं चलैत बीहनि कथा विधा साहित्यिक छद्म खरहा सं टपि अपना के विजेता कहेबाक पात्रता आब हासिल क' लेने ऐछ।जन्मक पछाति ठेहुनिया मे कतेको के सैद्धांतिक पटकनिया दैत डेगा डेगी बढ़' लागल। तकर पछाति एकरा दबेवा/माटि मे गोड़बा लेल किछु तथाकथित/स्वघोषित विद्वान सक्रिय भ' गेला। फलत:एकर चालि बाधित होइत ठमकि सन गेल।

सोझां मे ' एकला चलो रे' के उघैत करीब एक दशकक यात्रा एकरा हेरेबा लेल वेश रहल। 2010 मे पुन: इ कान्ह उठेलक। आ ताहि मे पछिला सं जेरगर समूह नव आँखि-पाँखिक संग अंगेज पुन: सोझां आनि थिर केलनि।' विदेह , इ पाक्षिक' बनल राजपथ आ सारथी भेलाह संपादक-.गजेन्द्र ठाकुर आ सहायक संपादक-उमेश मण्डल। ऐ एक दशकक भीठ पड़ल साहित्यिक जमीन पर श्री राजक ' बीहनि कथाक साहित्यक बीराड़क बीहनि सं रोपनि भेल। तकरा हरियरी अनलनि गाम-घर, पत्रिकाक संपादक - श:री रामभरोस कापड़ि भ्रमर। आ ऐ तरहें श्री राज भेलाह' वात्सल्य ' बीहनि कथा(2003)सं एकर पहिल प्रकाशनक स्वामी।

बीहनि आ कथा शब्दक उत्पत्ति

-------------------- --------------------

संस्कृतक ' ब्रीही ' शब्दक अर्थ होइछ बीज आ मैथिली मे बीहनि/बीहन/बीहैन सेहो ओही शब्दक मूलार्थ मे निहित।--प. भवनाथ झा

कथा-संस्कृतक कथ् धातु सं बनल। जकर तात्पर्य होइछ- कहब   वा वर्णन करब।

बीहनि कथाक अर्थ आ परिभाषा

बीज/बीजम संस्कृत शब्द थिक। यथा-यज बीजै:सहस्त्राक्ष -महाभारत

कथा सेहो संस्कृत शब्द थिक। यथा-कथासरित्सागर ।

कथाक मूलत: छ तत्त्व संग निर्मित होइछ।

01-कथावस्तु-कथाक संरचनात्मक रूप कथानक अथवा कथावस्तु कहाइछ। एकरा मे चारि प्रमुख स्थिति होइछ-आरम्भ, आरोह,चरम आओर अवरोह।

02-चरित्र चित्रण-उपपस्थित पात्रक गुण-दोषक वर्णन। रिजर्व चित्रण कहाइछ।

03-संवाद-पात्रक मनोदशाक वर्णन में प्रयुक्त शब्द।

04-देश काल-स्थितिक वास्तविक विवेचना लेल तैयार वातावरण।

05-उद्देश्य-कथा सृजन में उदघाटित मूल वा सार्थक पक्ष।

06-शैली-प्रस्तुतिकरणक कलात्मक विश्लेषण।

अर्थात् बीहनि कथा पूर्णत: संस्कृत शब्दक उत्पत्ति थिक।जेना- लघुकथा

मुदा साहित्यिक विधाक रूपें जाँची त' इ विधा मूलत:स्वतंत्र आ पूर्ण रूपे मैथिली साहित्य मात्रक विधा थिक।आयातित/ नकल नै।

बीहनि माने बीज/बीया।जाहि मे विकास करबाक गुण निहित होइछ।मुदा ओ अविकसित रहैत ऐछ।समय अएला पर विकसित होइत ऐछ।ओकरा मे एक सं अनेक होएबाक गुण रहबाक चाही।बीहनि कथा-एहेन कथा,जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्षमता राखए ओ बीहनि कथा भेल/हएत।अन्यथा नै।

तें बीहनि कथा मे निष्कर्ष नै हेबाक चाही।---डॉ. भवनाथ झा

बीहनि कथा विधाक नामकरण कर्ता श्री राजक मतानुसार--

बीहनि कथा,ओइ बीयाक समान ऐछ जकरा मे झमटगर/पूर्ण गाछक संभावना हो।मुदा ओ गाछ पीपर/पाकैड़ नै,पौध रूप मे हो।परञ्च बोनसाइ नै।

पौध रूप सं तात्पर्य जे कथ्य/शिल्पें गसल मुदा शब्दक संख्ये सए सं डेढ़ सए धरि हुअए।मुदा बन्हन मे बान्हल नै।

रचनान्त निकसगर(निस्तार देने)नै हुअए।निष्कर्ष पाठक पर।

बीहनि कथाक चर्चित आ लोक प्रिय कथाकार, संपादक आदरणीय घनश्याम घनेरो ऐ विधा के परिभाषित करैत कहै छथि---

कोना बुझबै जे इ रचना बीहनि कथा भेलै:--

(क)शब्दक मानक औसत सव सौ हो

(ख) विषय मारक ,आ सोचबा पर विवश करैत हो।

(ग) कथ्य एहेन,जेना लगैत हो कथा/उपन्यास वा कोनो गद्यक सार हो।

(घ) कथा मे निष्कर्ष नै हो।

कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर श्री राजकुमार मिश्र जीक विचारें---

(क) आकारगत छोट सं छोट हो

(ख) कथ्ये फरिछएल आ गसल हो

(ग) संपूर्ण गद्यक संभावना निहित हो

(घ) ऐ सं इतर, अव्यवस्थित रचना फोंक हएत।ओ बीहनि कथा नै।

बीहनि कथा विधाक मानकीकरणक आधारभूत इकाइ

""""""""""""""""""""""""""""""",,,,,,"",,,,,,,,,"",,"",,""""""""""

गद्य साहित्य, मूलत: कथा विधाक मानकता तयकरणक आधार अंग्रेजी साहित्य ऐछ।अंग्रेजी साहित्यक अनुसार विश्व भरिक कथा ,अंग्रेजीक Flash fictionक अन्तर्गत निहित ऐछ।इ फ्लैश फिक्सन छ: खण्ड मे विभाजित ऐछ जकर तेसर खण्ड टेलब्रा(Tellbra)क अन्तर्गत मैथिलीक बीहनि कथा विधाक नियामकता सन्निहित ऐछ।

फ्लैश फिक्सन(टेलब्रा)पर आधारित बीहनि कथा मापनक महत्वपूर्ण बिन्दू :-

01-कथ्य/शिल्पें पुष्ट जाहि कथाक न्यूनतम शब्द स. 20 आ अधिकतम 150 हो।

02-कथा साहित्यिक मानकताट परिपालक हो।यथा कोनो संस्मरण वा शब्द संग्रह मात्र बीहनि कथाक श्रेणी मे नै राखि सकैछ।

03-कथा,एकटा बीजक कथाक प्रतिदर्श हो।अर्थात एहेन कथा जाहि सं कथा/उपन्यास आदिक सर्जनाक संभावना प्रबल हो।

04कथा, निकस पर जा स्थिर नै हो। अन्त खूजल मुदा भावपूर्ण हो।

05-संपूर्ण कथा कोनो संदेशप्रद वा सकारात्मक उद्देश्यक हो।शब्दक स्थूलकाय मात्र नै।

उपरोक्त मानकता पर ठाढ़ रचना बीहनि कथा विधाक रचनाक रूपें अपन जग्गह पेबा मे सक्षम भ' पाओत।तकर पहिल मूल्यांकन लेखकक,पछाति संपादक ओ आलोचकक हाथ ऐछ।

"कोनो नव सफलता हासिल करवा लेल पुरान मे पैस' पड़त।,खंघार'पड़त।तहन परिमार्जित फल सोझां आओत।जे भविष्यक नव बात गढ़ि मोकाम धरि ल' जएबा मे सक्षम बना पाओत।'

एहि तरहें मैथिलीक लघुकथा विधा(कथा/गल्प)नामे लिखाइतक पछाइत बीहनि कथा विधा वैश्विक कथा मापदण्डें एकटा नव प्रतिमान गढ़ि,मैथिली साहित्य मे मैथिलीक अपन एक मात्र विधाक रूप मे स्थापित भेल।इ कोनो आन आयातित/नकल,विधाक विधान्तरण वा नामान्तरण नै।स्वयं मे मानक स्वतंत्र विधा हेबाक परिचिति कायम केलक।

एहि प्रकारें मैथिली कथा साहित्यक दू टा स्वतंत्र विधा अपन अस्तित्व कायम क' रखने ऐछ।पहिल-लघुकथा (Short story)जे कथा/गल्प नामे लिखाइछ।ठीक ओहिना जेना कि अंग्रेजीक Poetry,मैथिली मे 'काव्य' नामक विधान्तर्गत-गीत,गजल,,कविता, हाइकु,क्षणिका आदि स्वतंत्र नामे/क्रियाकलापें/चारित्रिक गुणे अपन- अपन परिचिति बनौने ऐछ।मुदा विधागत सबटा काव्य परिवारक अंश वा अंग थिक।

दोसर-बीहनि कथा(Seed Story)

उपरोक्त दुनू विधा मध्यआओर कोनो वैध/अवैध विधाक लेल जग्गह वाँचल नै ऐछ। मुदा लघुकथा नामे बलधकेली मे हिन्दी लघुकथा विधाक नकल मैथिली अवतरण के घोसियेबाक असफल प्रयास ठाम ठीम क' मैथिली साहित्य के उकरू बनेबाक षडयंत्र जारी ऐछ।इ भ्रम वा द्वन्द ऐ द्वारे भेल जे किछु मैथिली रचनाकार लघु कथा माने आकारे छोट कथा बूझि नकल करैत रहलाह।ध्यातव्य महत्वपूर्ण बात जे लघुकथा एकटा शब्द मात्र नै,ओहि नामक एकटा स्वतंत्र विधा थिख।जे मैथिली मे अदौ काल सं कथा/गल्प नामे लीखाइत पहिने सं स्थापित ऐछ।आब तहन विचार करी मैथिली सं इतर हिन्दी भाषा साहित्यक अपन विधा " लघुकथा "क मैथिली अंधानुकरण पर।

कोनो व्यक्ति,विषय,बौस्तक गुणक अनुसरण/अनुकरण बेजए नै।मुदा अंधानुकरण कतेक उचित ?

मैथिली साहित्य मे विद्यमान " बीहनि कथा " विधा सं इतर सब विधा कोनो ने कोनो अन्य भाषाक विधा सं आयातित ऐछ।मुदा जत' सं आयातित भेल,ओइ मे आ मैथिली मे अपन मानकता वा प्रामाणिकता सिद्ध केने ऐछ। हिन्दीक लघुकथा विधा जे स्वयं मे आइयो मानक वा प्रामाणिक सिद्ध नै भ' पावि घड़ीक पेण्डूलम जकां डोलि रहल ऐछ।ओइ मे आइयो कते शब्दक वा कोन रचना ओइ विधाट रचना ऐछ की नै,तै पर मंथन चलिये रहल ऐछ।एते दशकक लेखनक पछातियो मूल्यांकन मे लघुकथाक जग्गह लघुकहानी सं जोइर व्याख्या होइछ।जतेक मुड़ी ततेक पीरी बला गप्प।एहेन अव्यवस्थित विषय/बौस्तक अंधानुकरण ,हास्यास्पद आ कि उठल्लूपन ? "अपने आँखिगर रहैत, अन्हरा के सहारे बाट ताकब कतेक उत्कीर्णा बला बात।"

हिन्दी लघुकथा विधाक अंधानुकरणक प्रबल पक्ष रहल हएत,हमर सबहक सामान्य शिक्षाक हिन्दी माध्यम।हम सब एकेडमिक शिक्षा ग्रहण सामान्यतया हिन्दी भाषा माध्यमे केलहुँ।किताब,पत्र/पत्रिका क पाठनक भाषा हिन्दी रहलाक कारणे हिन्दी साहित्यक विषय-वस्तु पर निर्भर स्वाभाविक छल।तें हिन्दी साहित्यक संतान(विधा)कें पोसपूतक रूप मेअवैध रूपें अंगेज लेब अस्वाभाविक नै।ओही देखाँउसे वा नकल क'मैथिली मे लघुकथा संग्रह नामे 1972 मे आयल पहिल पोथी-" जे की ने से "--डॉ. हँसराजक।आ ,1975 मे तत्कालीन नवतुरिया कथाकार डॉ. अमरनाथक " क्षणिका "।दुनू पोथीक रचनाकार(आमुख मे)ऐ संग्रहक एको टा रचना ,कोनो पत्र/पत्रिका मे प्रकाशित नै हेबाट बात स्वीकारने छथि।ऐ सं इ स्प्ष्ट ऐछ जे मैथिली मे एकर कोनो अस्तित्व नै रहै।इ तहिया के घटना/बात छैक जहिया मैथिली सं इतर अन्य भाषा मे कथ्य/शिल्पें मजगूत मुदा आकारगत छोट रचनाक एकटा स्वतंत्र विधाकरूपें/नामे सृजन भ' रहल छलै।यथा-संस्कृत -लघ्वी,हिन्दी-लघुकथा,पंजाबी-मिन्नी कहाणी/कथावां,उर्दु-अफसांचे,ओड़िया-क्षुद्रकथा......आदि।

मैथिली मे हिन्दी विधाक अंधानुकरण क शुभारंभ क' किछु मैथिली कथाकार स्वघोषित विद्वान हेबाक दंभ पोसलनि।तकर करीब पचीस बरख धरि अंधानुकरणित लेखन सेहो सुषुप्त वा शुन्य रहल।पुन: 1997 मे लघुकथा संग्रह नामे दू गोट पोथी,शिलालेख-तारानन्द वियोगी आ खण्ड-खण्ड जिनगी -प्रदीप बिहारीक आयल।से ताहि अवस्था मे जाहि सं दू वर्ष पहिने(1995 मे)मैथिलीक अपन एक मात्र विधा बीहनि कथा अवतरित भ' चूकल छल।ऐ विगत पचीस वर्षक नमहर अन्तराल मे अंधानुकरणित हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरण पर मैथिली मे कोनो मानकता तय नै भेल छल।(आइ एकैसम सदीक दोसर दशक धरि नै भेल)।जेना पहिने मिथिला मे सत्यनारायण भगवानक पूजन पर सुनता उपासक चलनि छल।तहिना मैथिली रचनाकार लघु कथा शब्द सुनि मात्र लघु कथा लिखबाक नकल करय लगलाह।जहन की हिन्दी मे लघु कथा शब्द मात्र नै,ओहि भाषाक एकटा स्वतंत्र विधा ऐछ।आ मैथिली मे कथा/गल्प नामे लिखाइत लघुकथा विधा पहिने सं विद्यमान छल।आब नकल क' लिखल जाइ बला रचना-

जे बीस शब्द सं आठ सौ धरिक ऐछ।तखन प्रश्न उठैत जे कतेक लघु,ककरा सं लघु ?ऐ पर प्रकाशित कोनो तय मानकता नै छल(ऐछियो नै)जाहि सं इ सुनिश्चित कएल जए सकए जे कोन रचना लघुकथा विधान्तर्गत स्वीकार वा अस्वीकार कएल जा सकए।प्रसिद्ध कथाकार ओ इतिहासकार डॉ. मायानन्द मिश्र एकरा नकारैत लिखने छथि--" मैथिली मे लघुकथा नामे एक अन्य कथा लेखनक विकास भेल ऐछ जे समकालीन कथा/गल्प नै,अपितु चुटुक्काक निकट ऐछ।"--मैथिली कथाक विकास(संपादक-बासुकीनाथ झा)साहित्य अकादमी -2003

आधार हीन लेखने मठोमाठ हेबाक/कहेबाक परम्पराक निवहता मे किछु रचनाकार लीन रहलाह।जहन कि बेसुरा तान सं प्रसिद्धि पेनिहार गायक जकां बिना मानकताक लेखन मे लीन रहनिहार अपना के प्रयोगवादी आ प्रतिष्ठित बुझनिहारक रचना आ ओ तथाकथित विधा स्वय: खारिज ऐछ।ताहि लेल अदखोइ-वदखोइ आ माथा पच्चीक खगते कोन?

हिन्दी विधाक मैथिली अवतरण लघुकथा नामक रचना आइ धरि बसात मे बौआइत ऐछ।जमीन पर अनबाक कहियो कोनो निश्तुकी प्रयास नै भेल।ओ तथाकथित विधा/रचना स्वत: खारिज होइत चेतना शुन्य भ' गेल।किएक त' जहन जमीन पर उतरबाक प्रयास केलक तहन आधारहीन हेबाक कारणे सूपक भाटा सन ओँघराइत रहल किएक त' स्थिरताक आधार पहिने सं नदारद!किछु स्वघोषित वा परपोषित विद्वान सब--" डाँरि पारि के ओकरा लक्ष्मण रेखा बुझ' लगलखिन,मुदा डाँरि सोझ भेल की वक्र तकरा सं दूर धरि सरोकार नै।"प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री कुणाल ,कथा प्रसंग लिखल अपन आलेखक अन्तिम अनुच्छेद मे लिखै छथि--"आब मैथिली मे लघुकथा नामे किछु रचना सेहो देखाइछ,जे मैथिली साहित्य मे आधार हीन ऐछ।तें ओकर चर्च करब व्यर्थ सन।"--अंतिका-रजतजयन्ती अंक(2008)संपादक- अनलकान्त।

लघुकथा नामित रचनाक भविष्य ?

''

जेना अंग्रेज़ी मे पोएट्री,मैथिली मे " काव्य ' विधा ऐछ।आ ऐ काव्य विधान्तर्गत--गीत,कविता ,गजल,क्षणिका, हाइकू आदि स्वतंत्र नामे आ स्वतंत्र अस्तित्वे छैक।मुदा विधागत सब एकहि परिवार "काव्य "क अंग छै।तहिना अंग्रेजी क शॉर्ट स्टोरी विधा छै ,आ कथा/गल्प ओकर अंग।

मैथिली मे लघुकथा सं इतर दोसर कथा विधा छै " बीहनि कथा "(Seed Story),हिन्दीक अंधानुकरणे लघुकथा नामे सृजित रचना बीहनि कथा विधान्तर्गत ग्राह्य ऐछ।परञ्च बीहनि कथाक तय मानकता पर ठाढ़ होइ बला रचना मात्र।से ओ लघु कथा नामे होइ वा बीहनि कथा नामे।

बानगी स्वरूप देखल जए डॉ. सत्येन्द्र झा जीक लघुकथा नामे दू टा रचना-

इसकूल--

ओहि गाम मे एकटा दोकान नै छलै।तीन किलोमीटर जाय पड़ै छलै छोटो छीन चीज किनबा लेल।जे कियो कहियो दोकान फोलबाक साहस केलक ओकरा दोकान मे दोसरे -तेसरे राति चोरि भ' जाय आ तकर बाद दोकान बन्न भ' जाय।चोरवा गामक नाम सं परोपट्टा मे जानल जाइत छल ओ गाम।मुदा नरेशक साहस कहू वा दु:साहस ओ बाहर सं आबि दोकान फोललक ओहि गाम मे।घर मे पिता आ पत्नी विरोध कयलनि मुदा ओ ककरो नै सुनलक।दोकानक स्टाफक रूप मे सभ सँ सेसर चोर के रखलक।ओ चोर सेहो निश्चिंत छल जे जखने बेशी समान जमा होयत कि चोराक सभ किछु ल' जायब।।नरेश तीन सए टाका ओहि चोरकेँ दै छल।शहर सँ समान अनबाक हेतु नरेश ओही चोरबाकेँ पठबै छल। क्रमशः चोरवा कोन समान मे कते लाभ होइत छल सेहो धरि बुझय लागल।

आइ ओहि दोकान मे समान भरल छल।आजुके राति चोरबा अपन संगी सभहक संग चोरिक योजना बनौलक।जखन दोकान बन्नक' नरेश चलि गेल तँ चोरबा अपन संगी सभहक संग दोकान मे घुसल।बोरा मे समान सब कसय लागल।एकटा संगी पुछलकै -" कते दामक समान हाथ लागल ?"

दोसर चोर कहलकै-"पांच हजार सँ कम के नै हेतै।"

"मुदा एहि पांच हजार मे तँ मालिक के पांच सयसँ बेशीक फयदा नै हेतै।साढ़े चारि हजार तँ मूलधन छै।"--चोरबा बाजल---फेर ओहिमे हमरो तीन सय के हिस्सा हेतै।" चोरबाक म़ोन तीत भ' गेलै।ओ अपन मित्र चोर सभके बुझबय लागल--चोरि त' तखने जायज होइछ जखन हमर हक छीनि क्यो अपन घर भरय,मुदा नरेश बाबू तँ ओतबे कमाइ छथि जतेक उचित अछि।ओ नाजायज लाभ कहाँ लै छथि ?"

चोरबा चोरि करबाक विचार बदलि लेने छल।संगी सभ ओकर निर्णय पर सहमति व्यक्त कयलक।बोरा खोलि चोरबा सभ सामान केँ पहिने जकाँ सैंतय लागल।नरेश एकटा कोन मे ठाढ़ भ' ई सभ देखैत रहल।ओकरा बचझना गेलै जे ओ कोनो दोकान नहि,एकटा इसकूल खोलने हो।

विश्लेषण--उपरोक्त रचना शब्द संख्ये नमहर ऐछ!माने टेलब्राक निर्धारित शब्द संख्या-150 सँ उपर।

कथ्य-प्रेरक,पंचतंत्रक कथा समकक्ष।प्रारम्भिक लेखनक करीब बाझल।

शैली- कथा बला,सेहो पूर्ण नै।छेंट सन।

तें बीहनिकथाक परिधि सं बाहर ऐछ।

दोसर बानगी

मौअति

""""""""""""

ओ ईमानदार छल।तेँ लोकसभ ओकरा मारय छल।लोकसभ कहलकै- तोरा कुकुरक मौअति मारबौ।ओ चुप्प छल,मुदा प्रसन्न।कारण- ओ मनुक्खक मौअति नहि मरय चाहैत छल।

विश्लेषण-इ रचना निर्धारित शब्द संख्या मे बान्हल ऐछ।

मुदा कथ्य - भाषण वा आदेशक हिस्सा मात्र।

शैलीगत-निष्कर्ष पर पहुँचा देल गेल छैक।

तें इहो बीहनिकथाक हद मे नै रहि रहल।

उपरोक्त दुनू रचना--सत्येन्द्र कुमार झाक लघुकथा संग्रह-अहींकेँ कहै छी(2007)।पृष्ठ- 30/31 सँ उद्धृत।

आब अही लेखकक इ तेसर कथा क बानगी नीचाँ ऐछ जे हुनकर नवका संग्रह-"जँ अहाँ सुनितहुँ"(2020) सँ ऐछ ।

भेटब डूबब

""""""""""""""""""

" अहाँक जीवन मे सभ सँ नीक की लगैत अछि ?"

"अहाँके भेटब...."

"आ अहू सँ नीक.....?"

" हमरा हेरा जएब...?"

उपरोक्त रचना लिखल त' गेल ऐछ लघुकथा नामे मुदा बीहनिकथाक मानकताक करीब ऐछ।

यथा-निर्धारित शब्द संख्या(अधिकतम-150)क भीतर

कथ्य आ शिल्पें गसल।

निस्तार विहीन।

तें इ रचना पूर्णत: बीहनि कथा विधाक अंग मानल जा सकैए।शेष निंघेस सदृश्य।ठीक ओहिना जेना कोनो एक कक्षा मे पढ़ैत सब विद्यार्थी परीक्षा समय समान प्रश्न हल करैछ।परिणाम मे न्यूनतम अंक 30% प्राप्ति बला विद्यार्थी मात्र सफल आ शेष असफल घोषित होइत ऐछ।

आब एहने बानगी बीहनि कथा नामे लिखल रचना सँ....

डागदर साहेब-- मिथिलेश सिन्हा

------------------ ------------- ------

बड़ड दिन सँ पत्नी कहैत छलीह जे,हमरा पर किछु धियाने नै दैत छी।खाली मोबाइल मे खुटूर-पुटूर करैत कविता-कहानी रचैत रहैत छी.....जखन बेमारी बढ़त,पलंग पकड़ि लेब...तखन सबटा कविगिरि घुसरि जएत।

एहेन धमकी पर के नहि डरतै यौ?पत्नी कैँ होमियोपैथिक दवाई पर पूर्ण विश्वास छैन्ह।पिछला मंगल दिन शहरक बड़ड पुरान एगो बंगाली डागडर ठाम हुनका ल' गेलहुँ।

सांझुक बेर,लगभग आठ-नौ गोट रोगी बैसल छलाह।डागदर साहेब बयस सँ लगभग अस्सी-पचासीक हेताह।एकटा रोगी पर आधा घंटा पूछताछ करैत,अपन डींग डांग सँ रोगी आओर परिजनकैँ अपन बड़प्पनक खिस्सा कहैत समय आगाँ खींचि रहल छलाह।हमर नम्बर दोसरे छल,मुदा घंटा भरि डागदर साहेब लागल रहलाह।

अगल-बगल मे बैसल आन रोगी अकछय लागल।आब हमर नम्बर आएल।

" किनको देखाना हाय ?"

" जी,हमर पत्नी कैँ...।"

" हूँ,इधर आइए"

" हम हरि बाबूक बालक थिकहुँ.."

"ओहो,तुम इंजीनियर का बेटा है ।

ओ हमसे ही अपना इलाज कराता था..कैसा है ओ..?"--आन रोगी दीसन तकैत बजलाह।

" जी,ओ मरि गेलाह..."

" ओ गॉड...,तोमहारा माई कैसा है?"

"जी,ओहो मरि गेलीह...।"

हमर जवाब सुनि क' बेंच पर बैसल आन मरीज,बहन्ना बना ससरय लागल....।---डागडर साहेब,आश्चर्यचकित भाव सँ खन हमरा,खन रोगी सबकैँ ससरैत देखय लगलाह।

विश्लेषण:-

उपरोक्त रचना बीहनि कथाक मानक शब्द स. सँ बाहर ऐछ।

कथा मे उप कथाक समावेश।

कथ्य-शिल्पें कथाक छेंट सन लघु कथा।

----मिथिलांगन,अंक-38-39

निर्वहन--कल्पना झा

"’’’’’’"""’’’’’’’’’’’""""’"’’’""""""""""""

--माय गे! दादी त' हाथे सँ लपे लप तिल-चाउर परसै छलीह,मुदा तों त' चम्मच सँ परसै छें ?

--धुर्र ! ताहि सँ की हेतैक ?

--नहि हेतैक की...?हमरो सबकेँ नीक रस्ता भेटल।

--से की ?

--"इएह जे ' निर्वहन 'मे सेहो 'चम्मच ' लगाओल जा सकैछ।

मिथिलांगन---36-37

विश्लेषण:-

इ रचना कथ्य-शिल्प आ शब्द स.मादे पूर्ण मुदा कथा सारक संग बन्न भेल।माने निकस पर कसैत।तें इहो कथा विधागत झूस ऐछ।

बेटा निगम। --घनश्याम घनेरो

लावारिस लहास पुछलकै :

-- बेटा! नगर निगम?

-- हम तोहर बेटा नहि, कर्मचारी छी।

-- हमरा लेखा तोहीं बेटा।

-- ठिक्के! लोक कँ लोक सँ मतलब नहि रहलै तँ...

-- पहिने हमरा घिसिएबह आ की कुकूर कँ?

-- तोरा।

-- पहिने हमरे किए?

-- एत्तेक मनुक्खता अखन छैक, तैं!

-- मनुक्खक लहास कें बादमे आ कुकूर पहिने कहिया सँ घिसिएल जेतै?

-- ई काज हमर अगिला पीढ़ी करत।

घिसिया क' ठेलापर चढ़बैत काल लहासक आँखि कुकूर दिस छलैक।

इ रचना ऐ विधाक सब मानकता यथा- निर्धारित शब्दक भीतर।फरीछएल कथ्य आ गसल शिल्प मे निस्तार रहित पूर्ण ऐछ!

अन्तत:मैथिली साहित्यक दू भाग भेल -लघुकथा (SHORT STORY)आ बीहनि कथा ,(SEED STORY)इ दुनू निर्धारित रूपें निरन्तरता बनौने रहत।शेष फोंक मात्र।

--"पहिने बीहनि कथा,सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ैत रहल।

आ आब................पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ैत रहत।

मुन्ना जी

1

असरा

बेरहट लए किछु देलकै ?

हँ ,बान्हि देलियै .

हम जाइ हियै....., नै सुनलकै की ?

सुनि गेली ,मुदा हमर मोन करै है जे आइ नै जेतै से नै हेतै ?

आइ मासक अन्तिम तारीख हइ, जएह एक दिनक खोराकी के पाइ त' बढ़ि जेतै.

ओना मोन त' हमरो आगू - पाछू करैहए. ई कहतै बलू त' रहि जेबै!

सब दिन त' एकरा थाका हारी रहिते हइ, आ घर अबै हइ त' बाले बच्चे सोहरल. हमरा लेल एकरा पलखति कहाँ रहै हइ.

ईह.....! हम की भरि दिन खटै हियै अपने पेट खातिर!

हे , पेट त' सबहक कोनहुना भरिए जाइ है. ई खाली, पेटे के सोचैत दिन, मास, बरख बितबैत रहओ.

हम एकर पलखतिक असरे तकैत रहि जाइ हियै. आ एकरा लेल धानि सन!

एह.....! हमहू त' कहिया स' उहे बाट तकैत रहियै.

हे , एने आउ ने...... केवाड़क विलइया ठक सँ उठल !

2

संगबे

अगिनवाणक फोँका जकाँ बड़बड़ा उठल रहै नेहक लावा.

कुलीन रहबाक कारणे नै कोइ बजै, आ नहिये कोइ रोकि पौलकै.

दिन… …

3

टेट्टर.

-- ऐं ,कुकूर के एतेक सेवा ?

-- लिस्बियन छै .

-- सासु कोना छथि ?

-- छोड़ू !

-- हुनकर चर्चो अनसोहाँत !

-- कुकुरो सँ बेकार बुझू !

-- जेटका बेटा कए सालक ऐछ ?

-- बीस पुर भ' गेलै .

-- जल्दीये स्थान भेटत.

-- कोन ?

-- साउसक

28-गणतंत्र

,मालिक, गोर लगै छीयैन!

के ?

हम,हीरवा कनिञा।भरि जुआनी खटि ,हिनका पुजिगर बनेलियैन आ आइ अन्चिन्हार ?

पछिला मास जे अहाँ गीदड़भभकी द' गेलहुँ--जे हमर एक-एक टा कैञ्चा (टाका) हिंसाब क' दौथ। अशोकबा कहैए-घर बैस के खो।

तहिये सँ अहाँ हमरा आँखि सँ ओझल भेल बुझू।

माजिन्जन ठेंगा उठा बाट ध' लेलनि....ठमकति!अच्छा दुरा पर एलौं त' खगतो कहिये दियय।

अशोकबा बाप बेमार हय,दवाइ आ खेनाइ,दुनू घर में घटल है।किछो मदति क' दौथ, अशोकबा के 10 तारीख के अबैया हय,,सबटा पाइ सधा देबैन।

हमरा ल'ग किछो नै हए,हम...

43-अदौ सँ...

--हमरा बेर पर अहाँ सब कें अहिना लेसि दैए।इ बुझियौ ने जे इ एकटा पुरस्कार मात्र नै,हमर बौद्धिक संपति छी।खाली लिखि के नै , अर्जित संपूर्ण धनराशि छोड़ि क' महानता थोपेलौं ऐछ।

-- बाउ, तोंही टा लिखै छह की ?तोरा सँ अजोध लेखक सब एत' काहि कटै छथि।की हुनकर रचना निश्शन सन नै?

--जकरा देखू तकरा गलथोथरइ, सेहो खाली सिरखारी पोथी पर। पोथी पर चर्चा कहियो नै।

--रौ, आबो मूँह चुपकर !हमरा नै बूझल ऐछ जे तोरा कोना भेटलौए पुरस्कार !

-- हें..हें..हें। कक्का " डगरिन सँ कतौ पेट नुकेलैए ?"

अहींक डेलवाहि क' त' सिखलौं जोगाड़।जहिना अहाँ पौलहुँ तहिना हम ।

-- ओह!

" जाहि घरक पानिए विषान्हि हो ताहि घर साकट ताक'चललौं।"

करोट

यै कनिञा,सुनि के दुख हएत,मुदा कहिए देब उचित बुझै छी।

कहौथ ने मां,हिनकर सबहक बात के दुख किएक हएत।

बौआ लाजे नै कहैए,हम सब निर्णय केलौं जे ओकर दोसर विवाह करा दियै।

इस सब जे निर्णय करथिन से उचिते हेतै।मुदा तकर प्रयोजन की ?

वंश पसार लए।

बाबू जी," दवाई आ जांच सं निश्तुकी भेल जे दोष हुनके मे छनि।कहौथ जे कएटा बेटीक जीवन गार्त करथिन त' मोन भरतैन ?

कनिञा,हमरा माफ करैत अपन कपारक दोष बुझि संतोष करौथ।

नै बाबू जी,से कोना हेतै ?

की करब अहां ?

हम दोसर विवाह करब!

के करत अहां सं विवाह ?

कोनो निसंतान मर्द!आ कन्यादान हिनके पल्ला!

पछतावा

-- नै रौ बौआ,सगरो समय बिगड़ल छै,एखन गाम सं नै जए देबौ।

-- आंइ यौ बाबू -पहिल बेर गाम सं जाइ सं पहिने त’ माय के फिरिसान केने रहियै।पढ़ि-लिखि गाम पर बैसल हमर माथ खएत की माटि हबकत ?"

--अहू बेर अहींक जिद्द गाम अनलक,नै त’ ओतौ कोनो...

बीहनिकथा

""""""""""""""""""""

रक्षा   : मुन्ना जी

-----------   -------------

--एक टा पोसुआ कुकुर अपन मीत सँ--

रौ, घर मे किए घोसिएल छें, निकल.देखही अनेरूआ कुकुर अपन हेंज मे घोसिए चाहैए !

-- ऐं...! एना नै होम’ देबै, चल- चल तूँ बढ...!

-- आ तोँ   ?

-- हम चिलका नुकेने अबै छी, अपना सब त’ लड़ि खपि लेब, मुदा ओकर की हेतै ?

बीहनिकथा

""""""""""""""""""""""

विचरण !   :   मुन्ना जी

---------   -----------

-- अहा....हा ! यै,समुद्रक किछेर मे बैसि केहेन आनन्दक अनुभव होइए ! समुद्र मे रहि रहि उठैत लहरि आ समुद्रक किछेर मे स्वतंत्र भ' लोकक विचरण   !

-- यौ, जेबै नै.....चलू ने !

--अहाँ बढ़ू ने हम पाछाँ सँ अबै छी.

" लोक सब विदेश सँ आबि एत' मनोरंजन करैए, स्वीमिंग शुट मे स्वतंत्र विचरण ! अहा की आनन्दक क्षण छै. "

--ओ.....त' अहाँ समुद्रक नै, ओइ स्वीमशुट बाली सब के निहारि निहारि आनन्द उठबै छी, नै ?

-- नै, नै, मोन मे उठल लहरिक वर्णन करै छलहुँ.

-- समुद्र मे जा देहक लहरि सेरा ने लियय, नैत' घुरमा उठत.

-- ओहू मे त' लहरिये छै !

-- यौ, समुद्रक लहरि निश्छल छैक, मुदा अहाँक......कामुक. !

चुनरी

'मुन्नाजी'

आशा दीदी बस स्टॉप पर ठाढ़ि छलीह । हुनका बगलमे ठाढ़ पुरुख उचकि - उचकि क' देखनि जेना - शंका भेलनि तँ टोकि देलखिन :

- अहाँ प्रतीक्षारत नहि मुदा किनको तकै छियै - नै ?

- नहि - नहि ! ओहिना ।

- तकर माने अहाँ हमरामे हेरायल छी - नै ?

- से नहि । मुदा एकटा चुनरी जँ अहाँक देह पर होइताय .....

- जखन लोकक नजरिए मे खोंट रहतै तँ झलफांफी चुनरी कोन काजक ?

पुरुख हाथक समतोला छिटकि क' रोड पर गुड़कि गेलै । ओ आगू बढलाह ता मे बस समतोला पर चढ़ि गेल रहैक ।

मुक्ति

-- हे भगवान, अहाँक घर देर ऐछ अन्हेर नै ! आइ बुझलौं।

-- की यौ, केसक निबटारा भ' गेल की ?

-- नै !

-- कनिञा नै देखाइ छथि ?

-- आइ हम दु सँ तीन भ' गेलौं

.

--आठम आश्चर्य , झूट्ठा नहितन !

-- कीए ?

-- विआहक तीने मास भेल, आ कहै छी तेसर....!

-- सत्ते कहै छी.

-- कतौ सेटिंग छलनि की ?

-- हँ।

-- तहन खुशी ?

--आइ ओकरे संग दोसर विआह क’ लेलनि !

श्री राज कें समर्पित :-

दरेग.

-- लहालोट भेल चिलका के कोरा मे लैत दादी माँ -

ऐँ यै कनिञा, केहेन निर्दयी छी ?

-- माँ , फैरेक्स बनेने अबै छी!

-- किए ,अपन छाती लगा लैतीयै से नै ?

-- माँ , अपन दुध पीएला सँ फीगर खराब भ’ जएत !

बजरूओ दुध पर त’ पलाइए जेतै ने !

-- धुर ....छी !

" अहाँ सँ नीक त' ओ निमुधन गए , जे अपनो बच्चा पालैए आ अहाँ सनक मायक चिलका सेहो ।

बीहनिकथा (Seed Story)

रिपोर्ताज

आई बारहवीं वर्गक परीक्षा परिणाम बहरेलै .चारू भ'र गहमा गहमी बढ़ि गेल छल.जत' सँ जे जनतब दिए सभ ठाम टॉपर मे धीये/ सुआसिन.

पत्रकारक एक टा दल , खुशी मनबैत धीया सबहक समूह मे जा प्रश्न केलनि --" सब ठाम सँ जनतब भेटैए जे ऐ बेरक टॉपर बेटीये सब ऐछ ! अहाँ सबहक की प्रतिक्रिया ? "

-- यौ, पढनिहार बेटा पढि- लिखि जोकरक हेबे करतै .नै पढ़निहारो लग बड्ड विकल्प छै, कियो जूस बेचतै, कियो रिक्सा - ठेला चलेतै , तीमन - तरकारी बेचतै, नै त' जेबीये कटतै. आ ताहू सँ मोन नै भरतै त' हमर सबहक पछोड़ ध' फिरिशान हेतै.

-- पूत धन के त' लपेट देलियै आ धीया सब ? -एक गोट पत्रकार टीपलक.

-- " धीया सब आब टॉप क' टॉप पद पर जा अपन जूति चलेतै ."

परस्पर.

-- हे यै ,ओम्हर द' नै जाउ.बेर उनहि गेलैए.

-- की करथिन, एखन त' साँझे छै राति नै ने भेलैए ? की करतै नेतबा सब खिधान्से ने ?

-- नै यै, उछन्नर करत !

-- कक्का , ओहो सब महिला दिवस मनेबाक योजना बना रहल ऐछ !

-- धुर बताहि ! महिला कल्याण की सोचत ओ सब सुथनी ! अपन जुआनीक कल्याणक रिहर्सल करैए !

-- " अहा ! मुँह केहेन लगै छै , जेना चाने हो...."

" रौ चुप्प तों सब ! बेचारी विधवा अपन हुब्बा सँ धीया - पुताक पेट त' भरै छै . "

-- हा..हा..हा ! नेता जी , धीया- पुताक पेट त' पछातिक गप्प , पहिने अपन देह- पेटक जुगत धरा नेने हएत !

-- हिनका कहलियैन- बाट बदलि लौथ , नै माननलनि ने.देखलखिन जनि जाति देखि कोना चौल करैए जेना ई संबंधीये रहथिन !

-- कक्का , हमरा सँ ओकर सबहक भलहिं कोनो संबंध नै होइ मुदा ओकर चालि सँ जरूर संबंध छै.

-- ऍं.....केहेन ?

--ओकर बौह , पंचायत समितिक काजे बी.डी.ओ ल’ग आ बेटी , कॉलेज जाइ छै तहन दोसरो पुरूषक जीह एहिना लपलपाइत हेतै , नै ?

-- ओह !ई कहिया धरि चलैत रहतै एना से नै जानि !

-- " जा धरि एहेन पुरुष सबहक आँखिक पानि सुखएल रहतै . "

टकटकी

बेरा बेरी लोकक जमा भेल भीड़क सोझाँ ठोहि पाड़ि क' कान' लागल छल ओ छऔँड़ी. कियो किछु पुछय त' उतारा नै द' सभहक मुँह तकैत रहल....

भीड़ बढ़ैत जा रहल छल....मुदा सब मुकदर्शक बनल.

शान्त भीड़ मे सँ आब शब्द बहरेलै " गै, ई कह तोहर नाम ठेकान की छौ ?"

--- यौ छोड़ू, की करब नाम ठेकान बुझि ?.

--- तोरा तोहर घर धरि पहुँचा देबौ.

--- यौ, हमर नै कोनो घर वाँचल आछ ने कोनो ठेकाना, हम त' दंगा पीड़ित शिविर मे सँ भागि एत' एलौं ऐछ.

--- किए भगलीही , अपन जान बचेबा लेल ?

--- नै यौ, अपन संपति बचेबा लेल. !

--- आँय ! तहन तो अपन गाम - घर जो ने अपन संपैतक रक्षा करिहें.

---- गाम मे किछु आब कहाँ वाँचल ऐछ.जे किछु संपति शेष ऐछ ओ त' हमरे लग ऐछ.आ तकरे बचेबा खातिर त' गाम सँ भगलौं.

" कत्तौ कियो रक्षक नै देखएल. !"

--- के पुरूष राखत तोरा ? जे राखत ओहो बदनाम भ' जएत.

हा....हा.......हा, ठठा के हँसैत......यौ , जँ पुरूष सबके बदनामीक सत्ते डर होइतै त' गाम सँ परदेश धरि हमर संपैतक नोच- नोची नै ने करितए. ?

भीड़ उछहि गेल....!

सुतिहार

-- तों त' बड़ड सुतिहार लगै छह हौ , थम्ह' तोरा एकर सबहक मेट (Team Leader)बना दै छीय' !

-- माथ पर बज्जर खसएब की ? हम अपने पुश्तैनी काज के सुखितगर बुझै छी...!

-- गामो मे सुतिहारी देखबै छलियै अहाँ मुदा पेट भूखले रहि जए.

-- तें त' शहर धेलौं !

-- आब सुखीतगर छी ने ?

-- सुख मरि गेल बुझू !

-- एँ...?

-- गाम मे तंगी एहेन जे शहर एबाक सोचबा पर मासूल जोड़ब पसेना छोड़ा देने छल .

आब त' सब मास मे हवाई जहाज से जा आइब सकै छी.

-- मास पुरिते गाम चल जा ठेही उतारै छ' की ?

-- नै साहेब, कैञ्चा पुरि गेल त' पलखति.....उड़ि गेल !

बीहनि कथा

वैधव्यता

जानि नहि, पुजारीक मोनमे की छन्हि - बिधवा रमाक प्रतिए ! ओकर उमेरे कतेक हेतै - अंदाजन बीस-एकैस साल । प्रतिदिन ओ अबैत अछि आ अपन मनोकामनाक प्रश्न मंदिरमे छोड़ि दैत अछि ।

रमेश कैँ सदैव एहि बातक कचोट रहैछ जे रमा असमय घटल घटनाक बिपत्ति उघि रहलि छलि ।

हँ ! एक बरख कहिया ने पूरि गेल छलै ओ विकट समय । आब रमा हँसि कैँ बजबामे सक्षम भेलि ताहिमे रमेशक योगदान छैक ।

मधुश्रावणी दिन ! मंदिरमे महिलाक जुटान - गर्द्धमिसान !

रमा हाथमे पूजाक थारीमे फल - फूल आ माला देखि पुजारी आगू अबैत रमा सँ आग्रह कयलनि - हाँ - हाँ ? रमा ! आइ सोहागिन सभक पाबनि छैक । मंदिरक शोभा स्थिर आ स्थायी रहैक - सहयोग करू, सिरिफ आइ घुरि जाउ ।

रमेश ई सुनतहि थारीमे राखल गेना फूलक माला उठा रमाक घेंटमे खसा देलकै आ बाजल - आब तँ मंदिरक कोनो व्यवस्था भंग नहि हयत ने ?

पुजारी आर आगू बढलाह - बाबू ! अहाँ नव विधानक संरक्षण कयल

निधोख पूजा करू

कोखिन

" हम अपन पेट पैंच लगएब,देह नै ने।"

सब स्त्री-पुरूष पेट भरवा आ देह झंपवा खातिर देश-परदेश जा की ने करैए।हम त' घरे में रहि कोखि पोसब आ सुखक सपना पूर करब।

श्रॉक्सी आ रॉड्रिग्स दंपति द्वारा देल गेल विज्ञापन -"एकटा स्वस्थ कोखिन स्त्री चाही,हमर गर्भधारण आ निवारणक लेल !"

इ देखिते स्मिता मुग्ध भ' गेल छलि। आ ओइ दंपतिक संपर्क में आबि सुखक सपना देखए लागलि।

स्मिता अहां किए उठेलौं एहेन डेग,लोक की कहत हमरा ,अहांकें ? देखै छीयै यशोदा बेन कें।विदेशी सब जहन ओकर घर आबि घुरै छै तहन लोक ओकरा अभच्छक संज्ञा दै छै।आब अहीं कहू जे इएह सुनबा लेल हम गाम छोड़ि सुरत धेलहुं?

नै विशाल,अहां निचैन रहू,हम चिकित्सकीय विधि सं गर्भ राखब,अवैध संबंधे नै।सफल होइते भेटत एक लाख डॉलर, हम सब भ' जएब मालोमाल।

"हम कोखि बेचब,देह नै।"

विधान

""""""""""""""

तों किए एना धौना खसेने छें गै,जो ने झंडा ल' के ,सब धीया-पुता खुशी मनबै छै।

कथी के खुशी यौ ?

अझुके दिन देशक अपन विधान बनल रहै।

उंह!भइया लेल हमरा लेल थोड़े न ।

इह!छौड़ी मुंह केना तुरूच्छ जकां केने ऐछ ।

गै मम्मी तों त' नहिये बाज,भइया के बड़का झंडा आ हमरा छोटकी सन।

माने दुनू भाय- बहीन लेल अलग- अलग विधान ने ?

गै बुच्ची,की भेलौ तहन सं एना किए घाठि फेनने छें ?

यौ पप्पा,सांझ खन मम्मी के कहलियै- डोलकी ला दुध नेने अबै छी।

कहलक- बताहि भेलें हें।मुनहारि सांझ के जुआन बेटी जेतै दोसरा टोल,भइया के कही अनतौ दुध।

तमसा जुनि।स्त्री कखनो पुरूषक चांगुर सं नोछड़ा जाइए।

" त' झंडा फहरा एहने परतंत्रताक जश्न मनाबी

मए बनबाक हर्ष!

ढ़ोल, हरमुनिया आ हाथ माइक नेने साड़ी ,समीज बालीक हंजेड़ अनचोके बुचकुन कक्काक आंगन में ढ़ूकि गेल।

कनिञां घोघ तनैत,बुच्ची सम्हारैत,नुकबैत कोठरी ध' लेलनि।काकी छाती पिटैत-रौ दैब रौ दैब पोता- पोता रटलौं त' एलीह भगवती। तै पर सं हिजड़ाक झुण्ड।।

क्षणहि मे सगरो टोल दलमलित!स्त्री गणक हेंज अंगना सं दुरा धरि सोहरि गेल छल।फरमाइस क' के गीत सुनै गेल।

नाच-गानक बीच कक्का काकी के एक हजार थम्हबैत लियय किछु कपड़ा लत्ता जोड़ि विदा करू।

यै मां इ लौथ एक हजार आओर मिला द' देथुन।

गै मए गै मए,जेना बेटा जनमल होइ!

मां,बेटा- बेटी नै,मए हेबाक सुख हर्षित केलक!

हिजड़बाक मुखिया आओर पांच सए लगा घुरबैतकहलक-"मइयां,हे इ आशीष।

" बेटीये से ने बेटा,बेटी सम्हारू त' जग चलतै।"

भार उघैत

''''''''''''''''''''''''''''

ऐं गै मम्मी तों इ की करै छें ?

की करै छी हम रौ ?

सुनै छी जे आंटी के मूइला पछाति तों अंकल के संग धेने रहै छें।

मार पपिआहा के केहेन बात बजै छें रौ !

होस्टल में रहि हमरा गाम घरक गप्प सं कोन सरोकार।गाम एलौं त’ सुनलौं गौंवा,टोलबैया सं।

धुर जो,तोहर प्रेम हमर अमृत ऐछ।

सत्ते गै,तहन हमर बात मानमे ?

हं रौ किए ने!

तों दोसर बिआह क' ले।

मुन्ना जी

निमुधन नै छी ।

""""""""""""""""""""""""""""""

चट...चट....चटाक!निकल, दूर भ' जो दुरा पर सं।हम सैनिकक अंग छी,कोठा वाली नै।

यै,हम किछु दिन सं नवीनक घर मे नित नव लोकक अबैया सं फिरिशान छी।नवीन विआहि क' सीमा पर चल गेल मुदा बहुरिया सीमा नंघैत सन..!

चुप्प करू,जहिया सं नवीन गेलैए,कनिञा के चौकठि सं बहरी देखलियैए।अपन परार एतै त' बैला देतै की ?

उंह,सब दिन नवका मनसा सबहक जात अवरजात सं सती लगैए ने।

जं अहीं मुहपुरूष छी त' दंडित करू ने ओहि मनसा सबके जे जबरदस्ती घर घुइस ओकरा प्रताड़ित करै छै।आ असगर घर में ओ निमुधन भेल छै।

कनिञा एकटा छऔंड़ाक नरेठी धेने दुर्गा रूप में चौकठि नांघि गेलि-

'आइ कोनो बाप नै बचेतौ।तोहर मुक्ति हमरे हाथे।'

बेर पर

""""""""""

अमरी कक्का मोइस लैत बमकि उठलाह--

पोती भेल से त' खुशीक बात मुदा जनमिते सोहर सुनि अनकट्टल लागल।

अहां सब पुरषाक सब परंपरा ध्वस्त क' मान मर्दन करता पर वीर्त छी ।

कक्काक पीठ पर चालू भर सं,कलकतिया,बम्बइया,पटनिया भातिज सब लुधकल--

कक्का,बेटा विवाह में धोती-कुर्ता त्यागि शेरवानी धारण आ घोड़चढ़ी में से हो बमकल रहियै।मोन ऐछ ने।

जाह,तों सब तुर्क बना के छोड़बह।-कक्का सरदिएलाह।

हौ,कनिञा सेहो आधुनिकता मे लपटएल छथि,हुनका पुछियौन इ करते सोहनगर ?ओ त' कहती डी. जे शुरु करू।

नै पप्पा,जहन हिनका विजातीय कनिञा इ कहि स्वीकार जे बेटा सर्वोपरि ।

" त' बेटीये सं ने बेटा!बेटी जन्म पर सोहर किए नै ?

उपरौंज

रे रोहित ,तोहर एडमिशन भेलौ ?

हं शशांक,भ’ गेल,आ किताब से हो कीना गेल।

कोन स्कूल में लिखेलौ नाम ?-शशांक पूछलक

सर्वोदय बाल विद्यालय मे।-रोहित बाजल।

ऐं, सरकारी स्कूल मे।गेलौ तोहर पढ़ाई।किताब देखा तं ?

रौ रोहितवा,सभटा त’ उएह किताब छौ,जे हमर ऐछ।माने NCERTक

रौ शशांक,हमर भइया सब किछु बुझल- गमल मे नाम ओत’ लिखेलखिन्ह।भइया आ दीदी सेहो अही स्कूल में पढ़ने छथिन।

पढ़िए के की सब नेहाल सनाथ केलखुन सेहो कह ने ?

भइया ,सरकारी बैंक में कैशियर छथिन आ दीदी बी. टेक करै छै।

हमरा कहलनि-"मोन लगा के पढ़,तोरा हम सब अपना सं उपर ल' जेबौ।"

मुन्ना जी

विहान

भइया,मालिक कत' छथिन ?

की बात,कह ने ?

पप्पा बिमार छथिन,आइ काज पर नै औता।बंकियौता पाई भेट जैतै त इलाज मे काज अबितै।

ऐं !बस एतबे।अइ लेल मालिक आ तोहर बाबू किए।जखन मोन होउ हमरा लग अबिहें ,हम खोंइछा भरि देबौ।

मार मुंहझौंसा के बिन देह डोलेने पाइ !

डा.साहेब,रोगी हम नै बाबू छथिन।हमर मुंह नै निंघारू हुनका देखियौन।

ओ'..एत' काज लए शिक्षा नै,देह आगू कर' पड़ै छै।

शहर सं शिक्षा पाबि समाज परिवर्तनक मुहिम मे सुनीता परोपट्टाक जन प्रतिनिधि भ' चमकल।मुदा अर्थाभाव में बी.डि.ओ के धौंस देखेनिहारि आइ बाट बदलैत-

बी. डी.ओ साहेब,बान्ह खन्हियबै बला प्रोजेक्ट हमरा द' दियय।

हें ...हें...हें!बड़का प्रोजेक्ट बड़का पाइक एवज में भेटै छै!

आ देहक एवज मे ?

टाइम पास !

दायित्व

हे,इ सब राखि लियय,हम जाइ छी।आम,लीची,खम्हरूआ,सातु सब बेरा लियर दु दिन सं बन्न छल,अरूआ जएत।

जा , एखने एलियै कत' जेबै ?

गाम,अपन वास पर आओर कत' ,ओकर बाद त' स्वर्गे आओर कत' ?

से नै,एखने एलियै दु दिनक ट्रेनक झमारल।लगले फेर....!

हौ,तोरा सबकें एबा मे असोकर्ज छल',तों त' पराधीन छह,हम त' खुल्ला।तों सब हजार- बारह सए कोस पर रह' की चान पर।हम अपन बलही बोझ उघवा मे एखनो सक्षम छी।

ठीक छै,सब कुशल रह'!

बाबू जी,एकर सबहक खगताक फिरिस्त नमरिते रहै छै।पूर होइ बला नै।

तोहर बोझक रखबार हम ?